वेटलैंड बनने के बाद भी बदहाली का शिकार हो रहा सिरपुर तालाब

नवभारत मुद्दा

▶ जलकुंभी, गंदगी और अव्यवस्थाओं के बीच दम तोड़ता पक्षियों का बसेरा

शैलेन्द्र कश्यप

इंदौर. शहर की चर्चित वेटलैंड साइट सिरपुर तालाब, जिसे छोटा सिरपुर और बड़ा सिरपुर तालाब के रूप में जाना जाता है, आज बदहाली का शिकार होता जा रहा है. कुछ वर्ष पहले वेटलैंड घोषित होने के बाद यहां पक्षियों के संरक्षण और सौंदर्यीकरण के नाम पर कई सुविधाएं विकसित की गई थीं, लेकिन अब स्थिति उलट दिखाई दे रही है.

तालाबों में जलकुंभी का कब्जा बढ़ चुका है, गंदा पानी लगातार मिल रहा है, सुरक्षा जाल टूटे पड़े हैं, लाइट पोल से लाइटें गायब हैं और फव्वारे बंद पड़े हैं. लोग तालाब की इज्जत के अंदर पहुंचकर मछलियां पकड़ रहे हैं यहां तक की तालाब के जल में मवेशियों को भी चरवाया जाता है जो यहां के चौकीदारों की जिम्मेदारी है उन्हें हटाया जाए. लेकिन चौकीदार भी इस पर ध्यान नहीं दे रहे. वहीं सबसे गंभीर बात यह है कि जिम्मेदार अधिकारी समस्याओं पर ठोस कार्रवाई करने के बजाय केवल आश्वासन देते नजर आ रहे हैं.

सौंदर्यीकरण हुआ, संरक्षण नहीं: रितेश खेड़ा ने यह भी कहा कि अधिकारियों ने तालाब का केवल सौंदर्यीकरण किया, लेकिन संरक्षण के लिए विशेषज्ञों को शामिल नहीं किया गया. तालाब के आसपास बड़े पैमाने पर सीमेंटकरण होने से पक्षियों की नेस्टिंग प्रभावित हुई है. बिना विशेषज्ञ सलाह के किए गए वृक्षारोपण में ऐसे पौधे लगाए गए जो पक्षियों के अनुकूल नहीं हैं. उन्होंने बताया कि यहां प्राकृतिक प्रजातियों के पौधे लगाए जाने चाहिए थे ताकि पक्षियों का प्राकृतिक आवास विकसित हो सके.

पक्षियों को दाना डालना बना खतरा: तालाब पर आने वाले लोग पक्षियों के लिए बड़ी मात्रा में दाना डाल जाते हैं, जिससे यहां चूहों की संख्या तेजी से बढ़ी है. चूहों ने पेड़ों की जड़ों और पाल को खोखला करना शुरू कर दिया है. विशेषज्ञों के अनुसार इससे भविष्य में तालाब की संरचना भी कमजोर हो सकती है. साथ ही, यहां नशेड़ियों की गतिविधियों और सुरक्षा की कमी के कारण बर्ड वॉचर्स और आम लोग भी आने से हिचकने लगे हैं.

सवाल वही- आखिर जिम्मेदार कौन: वेटलैंड घोषित होने के बाद भी यदि तालाब गंदगी, जलकुंभी, सीवेज और अव्यवस्थाओं से घिरा रहे, पक्षी पलायन करने लगें और सुरक्षा व्यवस्था तक ध्वस्त हो जाए, तो सवाल सीधे जिम्मेदार एजेंसियों पर खड़े होते हैं. सिरपुर तालाब फिलहाल संरक्षण से ज्यादा लापरवाही का उदाहरण बनता दिखाई दे रहा है.

5 साल में हजारों पक्षियों से सैकड़ों तक पहुंच गया सिरपुर

आर्निथोलॉजिस्टऔर रिसर्चर रितेश खेड़ा के अनुसार, सिरपुर तालाब की स्थिति पिछले पांच वर्षों में तेजी से खराब हुई है. उन्होंने बताया कि पहले यहां हजारों की संख्या में प्रवासी और स्थानीय पक्षी आते थे, जो अब घट रहे हैं. उनके मुताबिक तालाब में मिल रहे गंदे पानी और ह्यूमन वेस्ट के कारण फॉस्फोरस और नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ी है, जिससे जलकुंभी तेजी से फैल रही है. छोटा सिरपुर तालाब लगभग पूरी तरह जलकुंभी से ढक चुका है. उन्होंने कहा कि यदि तीन दिन तक जलकुंभी नहीं हटाई जाए तो समस्या कई गुना बढ़ जाती है. फ्लाईकैचर, बाज और हैरियर जैसे शिकारी पक्षी यहां लगभग दिखाई देना बंद हो चुके हैं.

वेटलैंड के प्राकृतिक स्वरूप पर खतरा

पर्यावरण विशेषज्ञ संदीप खांडवैलकर के अनुसार, वेटलैंड वह क्षेत्र होता है जहां नम भूमि, प्राकृतिक वनस्पति और छोटे पौधे पक्षियों को सुरक्षित आवास उपलब्ध कराते हैं. लेकिन सिरपुर में कैचमेंट एरिया पर लगातार अतिक्रमण होने से तालाब की प्राकृतिक संरचना खत्म होती जा रही है. उन्होंने कहा कि जलकुंभी की सबसे बड़ी वजह गंदे पानी की आवक है. अमोनिया और नाइट्रेट की अधिकता के कारण यह तेजी से फैलती है, जिससे पानी में ऑक्सीजन कम हो जाती है और जलीय जीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है. विशेषज्ञों ने तालाब के आसपास लेमनग्रास, खस, वाटर बंबू और अन्य प्राकृतिक पौधे लगाने, फव्वारे चालू करने और नेचर-बेस्ड सॉल्यूशन अपनाने की जरूरत बताई है.

वेटलैंड समिति सदस्य ने चेताया

जिला वेटलैंड संरक्षण समिति के विशेषज्ञ सदस्य डॉ. दिलीप वाघेला ने बताया कि पिपलियापाला, सिरपुर और बिलावली जलाशयों में कई स्थानों पर सीवेज मिश्रण और इनलेट चैनलों पर अतिक्रमण गंभीर पर्यावरणीय खतरा बन चुके हैं. उन्होंने कहा कि यदि समय रहते सीवेज डायवर्जन, डी-सिल्टिंग और अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई नहीं हुई तो जल गुणवत्ता, जैव विविधता और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ सकता है.

निगम का जवाब जल्द करेंगे कार्रवाई

मामले में जब एडिशनल कमिश्नर नगर निगम एवं स्मार्ट सिटी सीईओ अर्थ जैन से चर्चा की गई तो उन्होंने सुरक्षा जाली और लाइट व्यवस्था जांचने तथा सुधार के निर्देश देने की बात कही. उन्होंने माना कि तालाब में अनट्रीटेड पानी नहीं जाना चाहिए और जलकुंभी बड़ी समस्या बन चुकी है. निगम द्वारा एक मशीन लगाने की बात भी कही गई, हालांकि अधिकारियों ने यह भी स्वीकार किया कि इससे पूरी समस्या का समाधान संभव नहीं है. अतिक्रमण हटाने और गंदे पानी की आवक रोकने को लेकर भी जल्द कार्रवाई का आश्वासन दिया गया है.

निगमायुक्त ने निर्माणाधीन एसटीपी का किया निरीक्षण

▶ कार्य समय सीमा में एवं तेजी से करने के निर्देश

इंदौर. नगर निगम आयुक्त ने आज शहर में निर्माणाधीन एसटीपी प्लांट, ड्रेनेज लाइन और सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया. इस दौरान उन्होंने एसटीपी प्लांट के काम और ड्रेनेज लाइन डालने के कार्य में गति बढ़ाने के निर्देश दिए.

निगमायुक्त क्षितिज सिंघल द्वारा अमृत योजना पैकेज 2.0 के तहत निर्माण कार्यों का निरीक्षण भी किया गया. आयुक्त ने 107 करोड़ के लागत से टिगरिया बादशाह में निर्माणाधीन 40 एमएलडी एसटीपी प्लांट का जायजा लिया. साथ ही टिगरिया रोड पर ड्रेनेज लाइन कार्य का निरीक्षण भी किया गया. इस दौरान आयुक्त ने निर्माण एजेंसी को काम तेजी से करने के निर्देश दिए. ध्यान रहे कि अमृत 2.0 योजना में नगर निगम द्वारा आईडीए की योजना 166 में 40 एमएलडी एसटीपी निर्माण कार्य किया जा रहा है. साथ ही गांधी नगर, नंद बाग, छोटा बांगड़ादा, टिगरिया क्षेत्र में सीवर लाइन डालने का काम चल रहा है. उक्त एसटीपी का ट्रीटेड वाटर टिगरिया बादशाह तालाब में छोड़ा जाना प्रस्तावित है. निरीक्षण के दौरान अपर आयुक्त आशीष पाठक, कार्यपालन यंत्री अश्विन जनवदे, सहायक यंत्री आकाश जैन, कंसल्टेंट, कार्य करने वाली एजेंसी के प्रतिनिधि एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे.

सफाई व्यवस्था का निरीक्षण

आयुक्त ने आज छावनी, मधुमिलन चौराहा, आर एन टी मार्ग, राजकुमार ब्रिज, मरीमाता चौराहा किला मैदान रोड ,खड़ा गणपति रोड ,संगम नगर, कुशवाह नगर, बांगड़दा रोड,टिगरिया बादशाह, रिवर साइड रोड,किशन पूरा, छतरी आदि क्षेत्रों की सफाई व्यवस्था का भी निरीक्षण किया. निगम स्वच्छता अभियान में लगे अधिकारियों को सफाई पर विशेष ध्यान रखने के आदेश दिए. आयुक्त ने किशनपुरा छतरी का भी निरीक्षण किया. छतरी की सफाई पर संतोष व्यक्त किया.

हाइड पार्क रेजिडेंस सोसाइटी शहर में सोलर मॉडल और पर्यावरण संरक्षण का नायब नमूना : महापौर

▶ स्वच्छता के साथ सोलर सिटी बनने की दिशा में बढ़ रहा इंदौर

नव भारत न्यूज

इंदौर. शहर में स्वच्छता के साथ अब पर्यावरण संरक्षण को लेकर भी जागरूकता बढ़ रही हैं. इसका नायब नमूना है शहर के मध्य स्थित धेनु मार्केट के पास हाइड पार्क रेजिडेंस सोसायटी, जहां स्वयं रहवासियों ने सौर ऊर्जा संयत्र स्थापित किया. साथ ही कॉमन एरिया केडी लिए अलग व्यवस्था की है.

शहर में अब स्वच्छता के साथ-साथ सौर ऊर्जा के प्रति भी तेजी से जागरूकता बढ़ रही है. महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने रविवार को धेनू मार्केट क्षेत्र का दौरा कर सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया. वहीं दूसरी ओर महापौर ने हाइड पार्क रेजिडेंस सोसाइटी में रहवासियों के साथ संवाद कर शहर के विकास, स्वच्छता और ऊर्जा संरक्षण पर चर्चा की. महापौर ने कहा कि इंदौर को क्लीन सिटी से सोलर सिटी बनाने का संकल्प लिया गया था, जिसकी शुरुआत 'हर घर सोलर' अभियान से की गई. नरेंद्र मोदी के आह्वान पर संचालित प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना के अंतर्गत शहर तेजी से आगे बढ़ रहा है. 900 मेगावाट के लक्ष्य में से लगभग 100 मेगावाट क्षमता नागरिक स्वयं अपने घरों की छतों पर सोलर संयंत्र स्थापित कर विकसित कर रहे हैं. उन्होंने बताया कि धेनू मार्केट के पास हाइड पार्क रेजिडेंस सोसाइटी का सोलर मॉडल को शहर के लिए नायब नमूना है. सोसाइटी के सभी 35 फ्लैट मालिकों के पास व्यक्तिगत सोलर कनेक्शन है, जबकि कॉमन उपयोग के लिए भी पूरी इमारत की छत पर सोलर रूफटॉप संयंत्र स्थापित किया गया है.

सतत ऊर्जा क्षेत्र में नई पहचान

महापौर ने कहा कि ऐसे प्रयासों से शहर स्वच्छता के साथ-साथ नवीकरणीय एवं सतत ऊर्जा के क्षेत्र में भी नई पहचान बना रहा है. उन्होंने शहर के नागरिकों से भी अपने घरों और भवनों में सोलर रूफटॉप स्थापित कर बिजली बिल को शून्य करने और पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने का आग्रह किया.

एक नजर में

अन्नपूर्णा मंदिर पर भागवत के मूल पारायण का शुभारंभ

इंदौर. पुरुषोत्तम मास के उपलक्ष्य में शहर के पश्चिमी क्षेत्र स्थित प्रमुख आस्था केंद्र अन्नपूर्णा आश्रम मंदिर पर रविवार को सुबह आश्रम के महामंडलेश्वर स्वामी विश्वेश्वरानंद गिरी महाराज के सानिध्य एवं आचार्य पं. कल्याणदत्त शास्त्री ने निर्देशन में 108 भागवत का मूल पारायण अनुष्ठान शुरू हो गया. मंदिर के संचालक स्वामी जयेंद्रानंद गिरी ने बताया कि यहाँ प्रतिदिन सुबह 9 से 12 बजे एवं दोपहर 3 से 6 बजे तक 108 विद्वानों द्वारा श्रीमद भागवत का मूल पारायण 15 जून तक जारी रहेगा. आश्रम ट्रस्ट, मंदिर संचालन समिति एवं भक्त मंडल के संयुक्त तत्वावधान में सम्पूर्ण अधिकमास के दौरान यह दिव्य अनुष्ठान होगा. इस दौरान प्रतिदिन माता अन्नपूर्णा, माता काली एवं माता सरस्वती का नित्य नूतन श्रृंगार भी होगा. मंदिर के न्यासी मंडल के प्रमुख विनोद अग्रवाल, टीकमचंद गर्ग, दिनेश मित्तल, पवन सिंघानिया, श्याम सिंघल एवं सत्यनारायण शर्मा भी शुभारंभ प्रसंग पर उपस्थित थे जिन्होंने शहर के आम भक्तों से इस दिव्य आयोजन का पुण्य लाभ उठाने का आग्रह किया. मंदिर पर मौसम को देखते हुए भक्तों की सुविधा के लिए छाया, बैठक, शीतल पेयजल, पूजा, अर्चना, दर्शन, वाहन पार्किंग आदि के समुचित प्रबंध किए गए हैं.

निरुपमा सुंदरराजन डीपीएमएसीआई की स्वतंत्र चेयरपर्सन नियुक्त

इंदौर. भारत की डिजिटल प्रेशियस मेटल्स इंडस्ट्री ने साथ मिलकर डिजिटल प्रेशियस मेटल्स एश्योरेंस काउंसिल ऑफ इंडिया (डीपीएमएसीआई) का गठन किया है. यह एक सेल्फ-रेगुलेटरी ऑर्गनाइजेशन (एसआरओ) है, जिसका उद्देश्य भारत के डिजिटल मेटल इकोसिस्टम में पारदर्शिता, संचालन की विश्वसनीयता और कंज्यूमर प्रोटेक्शन सुनिश्चित करना है. एमएमटीसी-पीएएमपी, सेफ़गोल्ड, ऑगमोंट, गुल्लक और फोनपे जैसी अन्य प्रमुख कंपनियाँ इसकी सदस्य हैं. डिजिटल प्रेशियस मेटल इंडस्ट्री को एक नया आयाम देने के लिए, सार्वजनिक नीति की विशेषज्ञ सुश्री निरुपमा सुंदरराजन को डीपीएमएसीआई का स्वतंत्र चेयरपर्सन नियुक्त किया गया है. उनके नेतृत्व में, यह ऑर्गनाइजेशन न केवल सख्त नियम लागू करेगा, बल्कि सरकार के साथ मिलकर एक पारदर्शी और कंज्यूमर-फ्रेंडली इकोसिस्टम भी तैयार करेगा. इस कदम से न सिर्फ कंज्यूमर्स का भरोसा बढ़ेगा, बल्कि यह इंडस्ट्री को टेक्नोलॉजी और इनोवेशन के साथ आगे बढ़ाने में मदद करेगा.

हाई ब्लड प्रेशर होने पर गंभीर बीमारियों का खतरा

इंदौर. आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली और बढ़ते तनाव के बीच हाई ब्लड प्रेशर यानी हाइपरटेंशन तेजी से लोगों को अपनी चपेट में ले रहा है. इसे साइलेंट किलर कहा जाता है, क्योंकि यह बिना किसी स्पष्ट लक्षण के शरीर को अंदर ही अंदर नुकसान पहुंचाता रहता है. लंबे समय तक अनियंत्रित रहने पर यह दिल, किडनी, दिमाग और आंखों को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है.

यह बात कोकिलाबेन धीरुभाई अंबानी अस्पताल के सेन्टर फॉर कार्डियक साइंस के डायरेक्टर डॉ. अखिलेश कुमार जैन ने कही. हाई ब्लड प्रेशर के संबंध में डॉ. जैन ने बताया कि जब शरीर की धमनियों में रक्त का दबाव लगातार सामान्य स्तर 120/80 से ऊपर बना रहता है, तो उसे हाइपरटेंशन या उच्च रक्तचाप कहा जाता है. समय रहते नियंत्रण न किया जाए तो यह हृदय को कमजोर बना सकता है. इससे हृदय रोग और हार्ट अटैक, किडनी पर असर, स्ट्रोक का खतरा और . आंखों की रोशनी पर प्रभाव पड़ता है. हाइपरटेंशन की सबसे बड़ी समस्या यह है कि शुरुआती दौर में इसके स्पष्ट लक्षण नजर नहीं आते. कई बार सिरदर्द, थकान, चक्कर या बेचैनी जैसे सामान्य संकेत दिखाई देते हैं, जिन्हें लोग नजरअंदाज कर देते हैं. विशेषज्ञों के अनुसार, 40 वर्ष की उम्र के बाद नियमित रूप से ब्लड प्रेशर जांच करवाना जरूरी है. साथ ही खाने में नमक और तैलीय भोजन कम करें. तनाव और चिंता से दूर रहने की कोशिश करें. पर्याप्त नींद लें और शरीर को सक्रिय रखें. मोटापे को नियंत्रित करें. धूम्रपान और शराब से दूरी बनाएं. 30 मिनट नियमित एक्सरसाइज करें.

जागरूकता डेंगू से बचाव का सबसे प्रभावी माध्यम

इंदौर. राष्ट्रीय डेंगू दिवस के अवसर पर प्रसिद्ध होम्योपैथी चिकित्सक डॉ. ए.के. द्विवेदी ने आमजन से डेंगू के प्रति जागरूक रहने, समय पर बचाव के उपाय अपनाने तथा रोग की रोकथाम एवं उपचार हेतु होम्योपैथी चिकित्सा का सहयोग लेने की अपील की.

डॉ. द्विवेदी ने कहा कि डेंगू एक गंभीर वायरल बीमारी है, लेकिन समय रहते सावधानी और उचित चिकित्सा से इसके दुष्प्रभावों को काफी हद तक कम किया जा सकता है. डॉ. द्विवेदी ने लोगों को सलाह दी कि घरों के आसपास पानी जमा न होने दें, कूलर, गमले, टंकियों और खुले पात्रों की नियमित सफाई करें। पूर्ण बाजू के कपड़े पहनें, मच्छरदानी का उपयोग करें तथा मच्छरों से बचाव के लिए आवश्यक उपाय अपनाएं. उन्होंने बताया कि जागरूकता ही डेंगू से बचाव का सबसे प्रभावी माध्यम है. उन्होंने कहा कि डेंगू में मरीजों को बुखार, कमजोरी, शरीर दर्द, सिरदर्द, प्लेटलेट्स में कमी सहित कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है. ऐसे समय में लक्षणों के आधार पर होम्योपैथी चिकित्सा सहायक भूमिका निभा सकती है। डॉ. द्विवेदी ने बताया कि मरीजों को पौष्टिक भोजन लेना चाहिए तथा गुड़-चना और सत्तू के सेवन की भी सलाह दी जाती है, जिससे शरीर को ऊर्जा मिलती है और मरीजों को शीघ्र राहत अनुभव होती है. डॉ. ए.के. द्विवेदी पिछले तीन दशकों से वे प्लेटलेट्स संबंधी समस्याओं वाले मरीजों के उपचार के लिए पूरे देश में जाने जाते हैं. अप्लास्टिक एनीमिया सहित गंभीर रोगों के मरीज देशभर से इंदौर पहुंचते हैं और होम्योपैथी चिकित्सा से लाभान्वित हो रहे हैं. इसी प्रकार डेंगू के मरीजों में भी सभी लक्षणों को नियंत्रित करने तथा प्लेटलेट्स स्तर में सुधार के लिए एडवांस्ड होम्योपैथी चिकित्सा कारगर सिद्ध हो रही है.

एक नजर में | **तीसरी भुजा को जोड़ने वाला हिस्सा अधूरा**

राजेंद्र नगर फ्लाई ओवर शुरू होने में लगेगा एक माह का समय

इंदौर. शहर के एबी रोड पर पीडब्ल्यूडी द्वारा बनाए जा रहे राजेंद्र नगर रेलवे ओवर ब्रिज शुरू होने में एक महीने का समय ओर लगेगा. उक्त ब्रिज पर रेती मंडी की तरफ तीसरी भुजा को जोड़ने वाला हिस्सा अधूरा पड़ा है, जिसका काम बहुत धीमा चल रहा है.

काम धीमा चलने से फरवरी में सीधी भुजा शुरू करने का पीडब्ल्यूडी ने जो दावा किया था, चार माह बाद भी पुल से आवागमन शुरू नहीं हो सका है. वहीं रेल विभाग द्वारा पटरी वाले हिस्से का काम अब शुरू किया है और तीसरी भुजा दिसंबर तक पूरी होकर खुल जाए तो बड़ी बात है. पीडब्ल्यूडी द्वारा राजेंद्र नगर फ्लाई ओवर ब्रिज पर से यातायात फरवरी तक शुरू होने का दावा किया गया था, लेकिन अब ब्रिज से यातायात जून महीने में भी शुरू हो जाए तो बड़ी बात है. ब्रिज का एबी रोड वाले सीधे हिस्से का काम पूरा हो चुका है, लेकिन राजेंद्र नगर तरफ जाने वाले हिस्से को जोड़ने का काम बहुत धीमा चल रहा है. काम इतना धीमा है कि पीडब्ल्यूडी ने एक माह पहले 15 मई तक सीधा यातायात शुरू करने का दावा किया था. वर्तमान में स्थिति यह है कि ब्रिज का राजेंद्र नगर वाला हिस्सा जोड़ने का काम आज तक हुआ ही नहीं है. यह बात अलग है कि राजेंद्र नगर रेलवे ओवर ब्रिज की तीसरी भुजा अभी शुरू नहीं होगी, क्योंकि रेलवे इंजीनियरिंग विभाग द्वारा उक्त हिस्से का निर्माण किया जाता है.

उक्त काम रेल विभाग द्वारा अब शुरू किया है. पीडब्ल्यूडी ने उक्त ब्रिज अप्रैल 2022 में काम शुरू किया था, जिसको निर्माण कार्य को चार साल बीत चुके है. ब्रिज का काम 18 महीने में ही पूरा करने का समय तय था. पीडब्ल्यूडी ने ठेकदार एजेंसी पर दबाव बनाकर निर्माण कार्य में गति बढ़ाने का दावा किया गया था, लेकिन ब्रिज का पूरा काम होने में छह माह का समय ओर लगने की संभावना है. अब अगले एक में बारिश शुरू हो जाएगी और तब तक उक्त फ्लाई ओवर निर्माण के कारण यातायात का ब्लैक स्पॉट बना रहेगा.

▶ ढाई साल से ज्यादा लग चुके

फिलहाल पीडब्ल्यूडी द्वारा बनाए जा रहे राजेंद्र नगर फ्लाई ओवर ब्रिज निर्माण में करीब ढाई साल ज्यादा लग चुके है और छह महीने ओर लगने संभावना है. देखा जाए तो डेढ़ साल में बनने वाला ब्रिज 4 .5 साल में पूरा हो जाए तो भी बड़ी बात होगी. उक्त ब्रिज का ठेका मेसर्स रामप्रकाश गुप्ता कंस्ट्रक्शन को दिया है. 920 मीटर लंबा और फोर लेन चौड़ा है. उक्त ब्रिज की निर्माण लागत 29 करोड़ रुपए है. उक्त की दो भुजा एबी रोड पर और एक भुजा राजेंद्र नगर पर उतरेगी. उक्त विषय को लेकर वर्तमान स्थिति के जानकारी लेने के लिए पीडब्ल्यूडी एसडीओ और ब्रिज प्रभारी कार्यपालन यंत्री को कॉल किया था, लेकिन उन्होंने कॉल रिसीव नहीं किया.